⇒ चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सर्वप्रथम गुप्तवंश में ~~सिक्के जारी~~ स्वर्ण सिक्के जारी किया। इसके अलावे शकों पर विजय ~~पाने~~ पाने के बाद अत्यधिक मात्रा में चाँदी के सिक्के जारी किया।

Note: ⊙ गुप्तकाल के अंतिम समय में मिलावटी सिक्कों का भी प्रमाण मिलता है।

⊙ गद्धैय सिक्कों पर अग्निवेदिकाओं का चित्र अंकित किया गया।

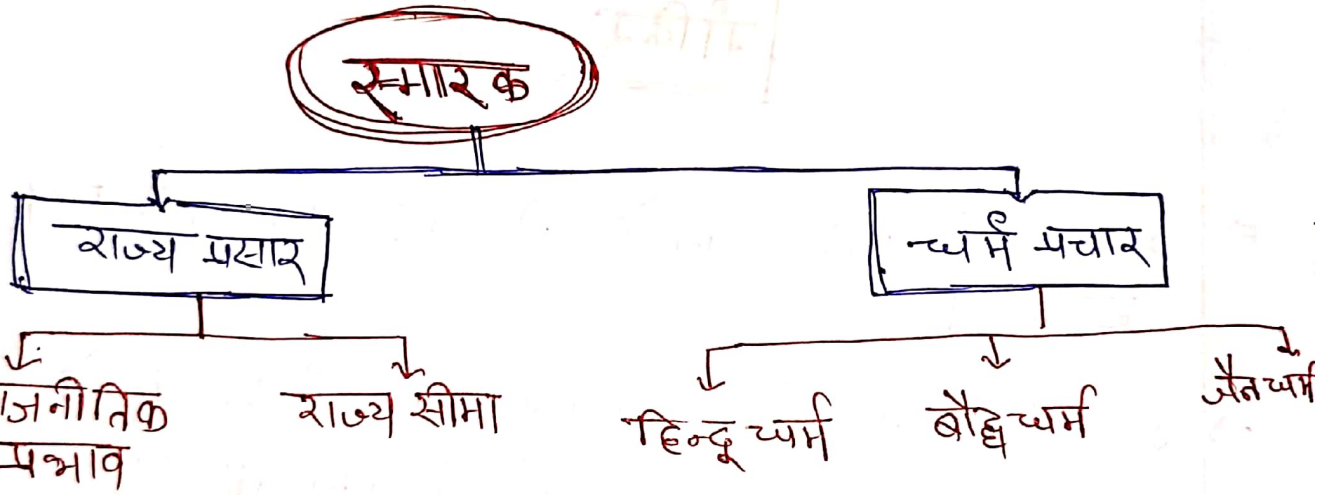

⇒ स्मारकों की बनावट से उस समय की आर्थिक सम्पन्नता के बारे में जानकारी मिलती है। इसके भव्यता नक्कासी से कला और तकनीक का पता चलता है। आज भी कई ऐसे प्राचीन स्मारक अपने यथावत स्थिति में टिकी हुई है।

⇒ अशोक के महल को देखकर फाह्यान ने इरान के शुशा के महल से तुलना किया और इसे देव निर्मित बताया है।

Scanned with CamScanner

⇒ मौर्यकालीन स्मारक ज्यादातर बलुआ पत्थर और लकड़ी तथा ईंट का बना है।

⇒ अशोक ने कई स्तंभों पर राज्यादेश खुदवाया उसके बनावट से कला एंव तकनीक का पता चलता है।

मंदिर

⇒ भारत में मंदिर बनाने की शुरूआत गुप्त काल से हुआ।

⇒ सम्पूर्ण भारत में मुख्य रूप से मंदिर बनाने की तीन शैलिया ही देखनेको मिलता है:

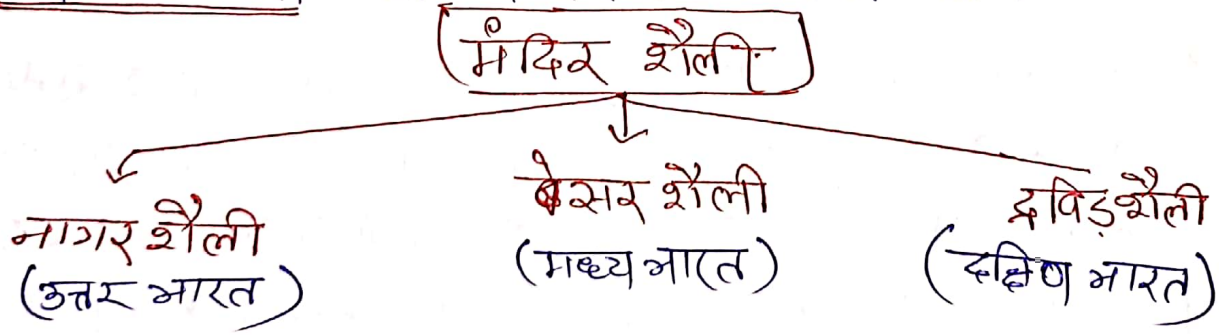

नागर शैली

यह शैली उत्तर भारत में प्रचलीत था। दक्षिण के तरफ नर्मदा नदी तक पसारा हुआ था।

Scanned with CamScanner

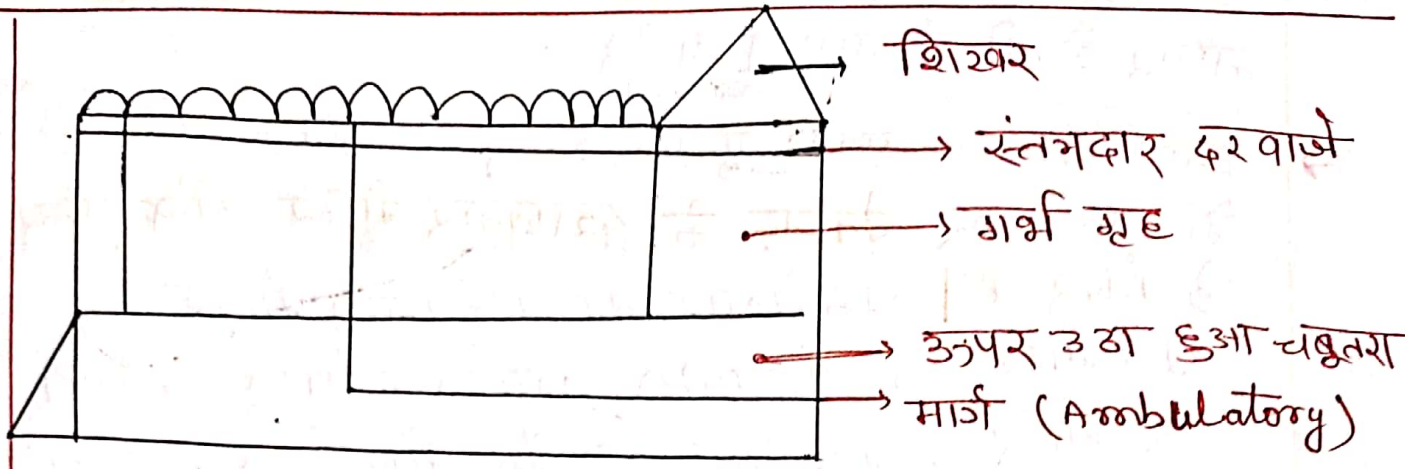

प्रमुख विशेषताएँ

- मंदिर के सबसे उपर शिखर होता है।
- मंदिर में दो भवन होते हैं— एक गर्भगृह और दूसरा मंड़प, गर्भगृह ऊँचा होता है और मंड़प छोटा होता है
- मंदिर परिसर में जल का कोई टैंक या जलाशय नहीं होता है।
- मंदिर चबूतरे पर बनाया जाता है।
- द्वार मण्डपों के निर्माण में स्तंभों का प्रयोग किया जाता था।
- मुख्य देव मंदिर के सामने सभाकक्ष या मण्डप स्थित होता है।
- गर्भ गृह के बाहर नदी देवियों, गंगा और यमुना की प्रतिमा स्थापित किया जाता था।
- शिखर का ऊर्ध्वाधर शीर्ष एक क्षैतिज नालीयुक्त चक्रस्तूप में समाप्त होता था जिसे आमलक कहा जाता था और उसके ऊपर कलश स्थापित किया जाता था।
- गर्भ गृह के चारों ओर प्रदक्षिणा पथ होता था।

Scanned with CamScanner

नागर शैली के प्रमुख मंदिर :

⇒ इस शैली के सबसे पुराने उदाहरण गुप्तकालीन मंदिरों में विशेषकर देवगढ़ के दशावतार मंदिर और भितरगाँव के मंदिर है। भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर सूर्य मंदिर (कोणार्क मंदिर), जगन्नाथ मंदिर खजुराहो का मंदिर, दिलवाड़ा का जैन मंदिर, खुमरा का शिव मंदिर इत्यादि।

> **Note:-**
> गुप्तकालीन मंदिरों के दरवाजे के बाई ओर मकरवाहिनी गंगा और दाई ओर कुर्मवाहिनी यमुना का चित्र होता था।

द्रविड़ शैली → (कृष्णा नदी से लेकर कन्याकुमारी तक द्रविड़ शैली के मंदिरों का विकास)

⇒ यह शैली मुख्यरूप से दक्षिण भारत में प्रचलीत था।

⇒ यह शैली मुख्य रूप से चोल काल में विकास हुआ इसमें पल्लव वस्तुकला की निरंतरता भी थी।

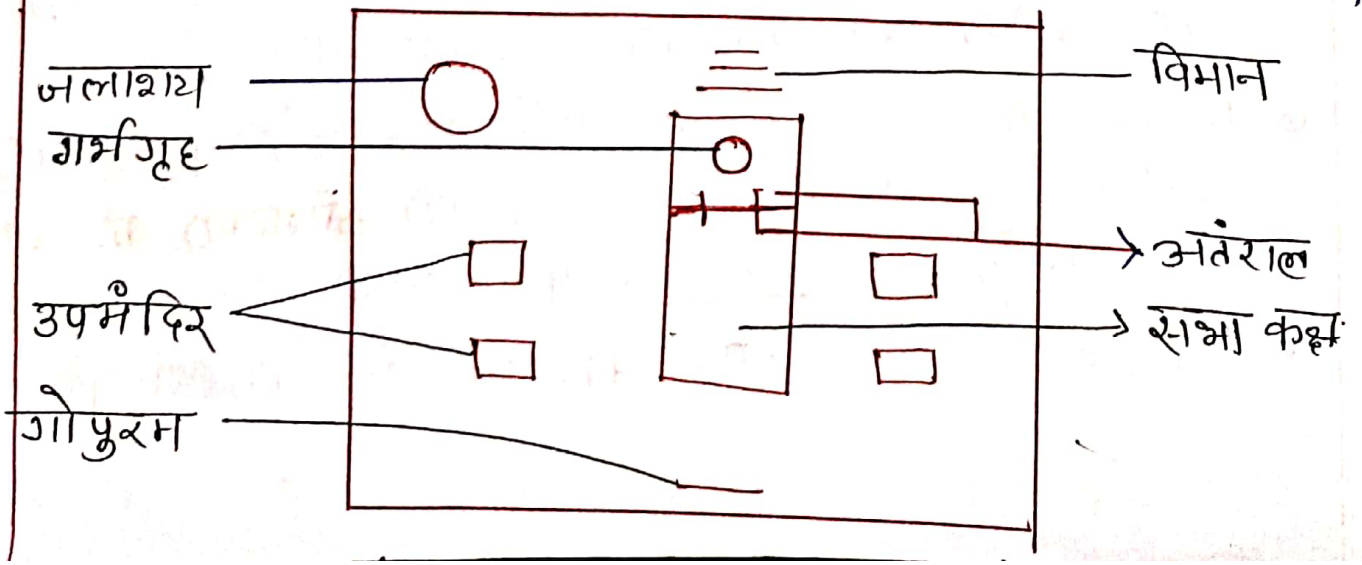

विशेषताएँ

- सामने की दीवार में एक ऊँचा प्रवेश द्वार होता था, जिसे गोपुरम कहा जाता था।
- मंदिर बहुमंजिला होते है।
- मंदिर परिसर का निर्माण पंचायतन शैली में किया जाता था। जिसमें एक प्रधान मंदिर तथा चार गौण मंदिर होता था।
- पिरामिडनुमा शिखर होता है जिसे विमान कहा जाता है।
- विमान के शीर्ष पर अष्टकोण आकार का शिखर होता था।
- विमान मुख्य मंदिर के शीर्ष पर होता है।
- सभा-हॉल गर्भ गृह से एक गलियारे द्वारा जुड़ा होता है जिसे अंतराल कहा जाता था।
- गर्भ गृह के प्रवेश द्वार पर द्वारपाल, मिथुन और यक्ष की मूर्तियाँ होती है।
- मंदिर के परिसर में एक जलाशय होता है।
- ऊँची चार दीवारी से घिरे होता है।

प्रमुख मंदिर: तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर (चोलशासक राजराज द्वारा निर्माण) गंगईकोंड चोलपुरम मंदिर (राजेन्द्र प्रथम द्वारा निर्मित)

=> द्रविड शैली के अन्तर्गत नायक शैली का विकास हुआ मदुरै का मीनाक्षी मंदिर इसका उदाहरण। रंगनाथ मंदिर

Scanned with CamScanner

बेसर शैली

=> इस शैली के मंदिर मुख्यतः विंध्याचल पर्वत से लेकर कृष्णा नदी तक पाए जाते है।

=> नागर और द्रविड़ शैलियों के मिले-जुले रूप को बेसर शैली कहते हैं। इसे चालुक्य शैली भी कहते हैं।

=> ~~विमान और~~ विशेषताएँ

- विमान और मंडप को ज्यादा महत्व।
- खुले प्रदक्षिणा पथ।
- बेसर शैली के मंदिरों का आकार आधार से शिखर तक गोलाकार या अर्द्ध गोलाकार होता है।
- खंभो, दरवाजों और छत को बारीक नक्काशी से सजाया जाता था।

प्रमुख मंदिरें :- एलोरा मे कैलाशनाथ मंदिर, हलेबिड़ बेलूर का मंदिर डांबल का डोडा बसाप्पा मंदिर, ऐहोल का लाड़खान मंदिर, बादामी के मंदिर इत्यादि।

(मंदिर स्थापत्य)

नागर	द्रविड़	बेसर
पाल उपशैली	पल्लव उपशैली	राष्ट्रकुट
ओडिशा उपशैली	चोल उपशैली	चालुक्य
खजुराहो उपशैली	पाण्ड्य उपशैली	काकतीय
सोलंकी उपशैली	विजयनगर उपशैली	होयसाल
	नायक उपशैली	

Scanned with CamScanner

बौद्ध विहार

बौद्ध विहार बुद्ध के ~~अनुयायी~~ अनुयाओं (बौद्ध भिक्षु) के रहने के स्थान को कहा जाता है।

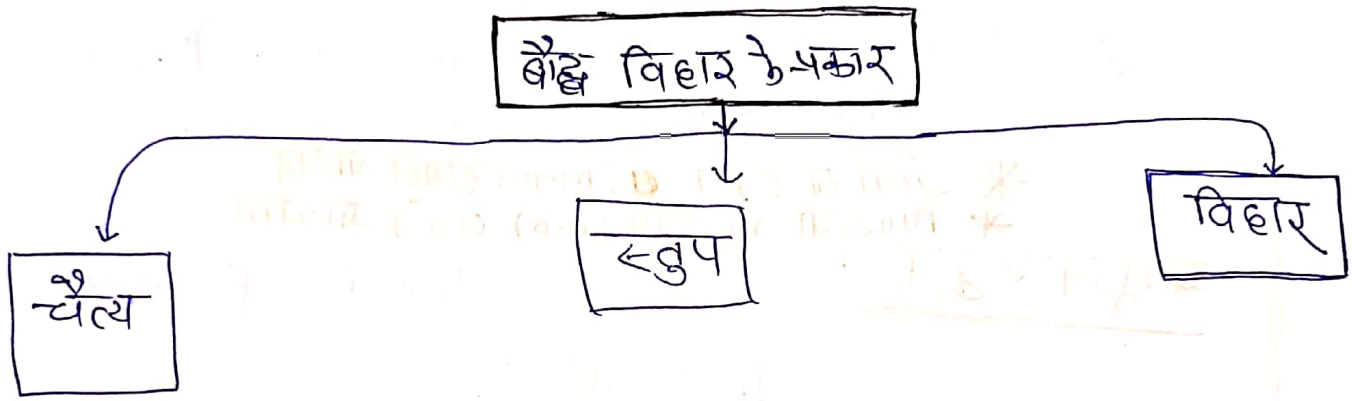

चैत्य :-

⇒ बौद्ध धर्म का पूजा स्थल होता है। यहाँ पर महान बौद्ध व्यक्तियों की समाधि के सती अवशेष रखा जाता है।

विशेषता : यह घोड़े के नाल जैसी पत्थरों को काटकर बनाया जाता था।

प्रमुख चैत्य :- अमरावती (महायान सम्प्रदाय) नासिक, कन्हेरी कार्ले (हीनयान सम्प्रदाय)

Scanned with CamScanner

स्तूप

बुद्ध के मृत्यु के बाद 9 स्तूप बनवाए गए
8 में उनकी मेधी में बुद्ध के अवशेष 9 वें में वर्तन

⇒ यह किसी महान बौद्ध व्यक्ति के यादगार में निर्मित किया जाता है।

विशेषता : ⊙ इसका बनावट कटोरे की तरह
⊙ चारों ओर वेदिका का निर्माण।
⊙ स्तूप के बीच में बौद्ध धर्म से संबंधित अवशेष रखा जाता है।
* सांची का स्तूप (M.P) सबसे प्रसिद्ध
* पिपरहवा का स्तूप (U.P) सबसे प्राचीन

प्रमुख स्तूप : भरहुत, सांची, धमेख, अमरावती नागार्जुनकोण्ड।

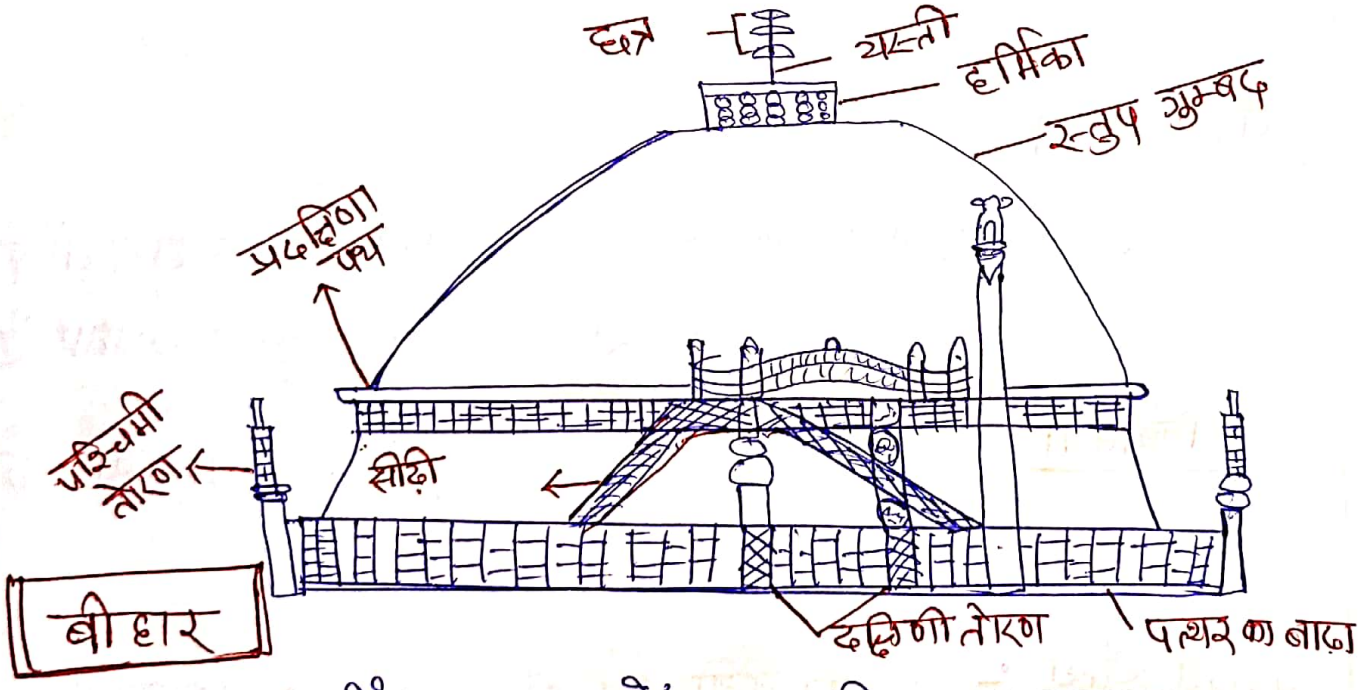

बीहार

⊙ बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थल।

विशेषता :- ⊙ चट्टानों को काटकर बनाने की परम्परा हीनयानियों ने शुरू किया।
⊙ महायानियों ने इसमें बुद्ध का चित्रण शुरू किया।

प्रमुख विहार :- जेतवन ( ) नालन्दा बौद्धविहार

Scanned with CamScanner